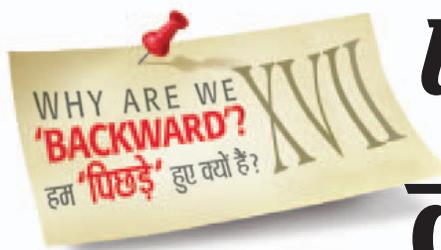


MOVING FORWARD – KOREAN STYLE

*Can a Small Farmer Earn More
than a Call-Centre Worker?*



फॉरवर्ड बढ़ना – कोरियाई स्टाइल में

*क्या एक छोटा किसान एक कॉल सेंटर में काम
करने वाले से अधिक कमा सकता है?*

VISHAL MANGALWADI

In Yong Am village, a small farmer already earns Rs 28 lakh (\$62,000) per year; and they are making plans to earn Rs 45 lakh per year by 2015!

Hidden in a mountain and covered by snow for more than three months in a year, without electricity, roads, or running water, Yong Am was one of the poorest villages in South Korea, just 30 years ago. Today it is one of the richest. There were no jobs, so many villagers were and still remain dependent on agriculture.

There was no organized school, politics or religion; they worshipped the spirits of their own ancestors and tree spirits. Occasionally they went to the Buddhist temple on the mountain, but the priests were seeking their own nirvana (exit) from this world of suffering. Therefore, they made no effort to organize the community in any way or to teach anyone anything of practical, worldly value.

In their ability and ingenuity the Buddhist monks were second to none. To them belongs the credit for bringing literacy to Korea. Their art, sculptures and ar-

विशाल मंगलवादी

याँ नग ऐम गाँव में एक छोटा किसान लगभग 28 लाख रुपये सालाना कमा लेता है और अब वे योजना बना रहे हैं कि 2015 तक यह आमदनी बढ़कर 45 लाख सालाना हो जाए।

पहाड़ों में छिपा हुआ और साल में तीन से अधिक महीनों तक बर्फ से ढका रहने वाला बिना बिजली, सड़क और पानी वाला यॉन्ग ऐम सिर्फ 30 साल पहले तक दक्षिण कोरिया के सबसे गरीब गाँवों में से एक हुआ करता था। आज यह सबसे संपन्न गाँवों में शुमार है। क्योंकि नौकरियाँ नहीं थीं, सो कई गाँववाले कृषि पर निर्भर किया करते थे और अब भी करते हैं।

न ही कोई संगठित स्कूल, राजनीति या धर्म ही था – वे अपने पुरखों की और पेड़ों की आत्माओं की उपासना किया करते थे। बीच-बीच में वे पहाड़ पर बने बौद्ध मंदिर में जाया करते थे। लेकिन पुरोहित इस दुःख भरी दुनिया से खुद का निर्वाण पाने की तलाश कर रहे थे। इसलिए उन्होंने समुदाय को संगठित करने का या किसी को कुछ भी व्यवहारिक और साँसारिक महत्त्व की चीज़ सिखाने का कोई प्रयास नहीं किया।

अपनी योग्यता और रचनात्मकता में बौद्ध भिक्षु किसी से कम नहीं थे। कोरिया में साक्षरता लाने का श्रेय इन्हीं को जाता है। उनकी चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुशिल्प शानदार हैं। उनकी अनूठी प्रतिष्ठा का कारण यह भी है कि उन्होंने धातु के

chitecture are superb. Their unique glory lies in the fact that they invented moveable metal fonts and began printing at least two centuries before the Europeans. Unfortunately, however, the scriptures they printed did not inspire anyone with a hope and a vision for building a great Korea. Consequently, a generation or two ago, in villages such as Yong Am, practically everyone was illiterate and uneducated, at least in the modern sense of the term. The village was also divided socially, in a milder version of India's own caste system. A man was considered wealthy if he could afford to "own" more than one wife. Women were second-class creatures and children were not groomed to seek a future better than their parents.

Young Am village has 63 families; of these only 30 own about two hectares each. Thirty years ago they grew corn, potatoes and sweet potatoes – but not enough to sell. They lived at subsistence level because they could not preserve potatoes even for their own consumption. There was no cold storage. Now all that has changed. They have organized themselves into an agricultural industry. All the families farm together without caste distinctions. They grow flowers and export them to Japan. They sell a medicinal plant, *Shin-suncho*, to companies that make health drinks. They grow fruit and dry it for the whole year. Even before electricity arrived in the village, a technique had been developed to preserve potatoes in specially designed caves in the mountains.

Now, exporters and food-processing companies are able to sign yearly contracts with the farmers, insurance companies are eager to insure the crops, and banks are more than willing to give loans for agricultural development, because these small farmers have organized themselves together to follow strict codes of agribusiness ethic and rigorous rules of quality control. They orchestrate the timing of their production and harvesting, not according to seasons, but to meet the market's tastes and demands. They supply fresh flowers when both Japan and Korea are covered with snow!

ISN'T AGRICULTURE DEPENDENT ON SEASONS?

Not in Yong Am. Most of them no longer worship nature or its governing spirits. They are establishing their own authority over nature, because they have begun to believe that they were created in the image of their Creator in order to establish their dominion over nature. In line with this new belief, much of the cultivation now happens in greenhouses, where freezing temperature outside makes no difference to the crops inside. In fact, sensitive crops are grown in greenhouses made of two layers of heavy plastic. During winter months, the top layer is covered with snow, but water is circulated between the two layers at 10° C. That keeps the inside temperature warm enough to grow whenever the crops are wanted by the buyers. The water is not supplied by a public dam built by the government. Farmers pump it up from below the ground, in line with their thinking that they were created to rule over nature, not to worship it. In fact, the farmers pay a tax to the government to use the water under their own lands.

चलायमान अक्षरों का आविष्कार किया और यूरोपवासियों से कम से कम दो सदियों पहले छपाई की शुरुआत की। लेकिन, दुर्भाग्यवश उनके द्वारा छापे गए धर्मशास्त्रों ने किसी को भी महान कोरिया बनाने की न तो आशा दी और न ही दर्शन। इसके नतीजतन, एक या दो पीढ़ियों पहले, यॉन्ग ऐम जैसे गाँव में लगभग हर कोई व्यवहारिक तौर पर अनपढ़ और अशिक्षित था, कम से कम आधुनिक अर्थों में। साथ ही गाँव सामाजिक रीति से भी बँटा हुआ था, भारत की अपनी जाति व्यवस्था के एक हल्के रूप की ही तरह। अगर कोई पुरुष एक से अधिक पत्नियों पर मालिकाना हक रखने का खर्च उठा सकता था तो उसे धनी माना जाता था। महिलाएँ दूसरे दर्जे की प्राणी थीं और बच्चों को उनके माता-पिता से बेहतर भविष्य की तलाश करने के लिए तैयार नहीं किया जाता था।

यॉन्ग ऐम गाँव में 63 परिवार रहते हैं। इनमें से केवल 30 ही के पास लगभग दो हेक्टेयर ज़मीन है। तीस साल पहले वे मकई, आलू और शकरकंद उगाया करते थे – लेकिन इतने नहीं कि बेच सकें। वे बस निर्वाह स्तर पर जीते थे क्योंकि वे अपने उपभोग तक के लिए आलुओं का संरक्षण नहीं कर सकते थे। वहाँ कोई शीत संग्रहण अर्थात् कोल्ड स्टोरेज की सुविधा नहीं थी। अब लेकिन सब बदल गया है। उन्होंने अपने आप को कृषि उद्योग में बदल लिया है। सभी परिवार बिना किसी जातीय भेदभाव के मिल कर खेती करते हैं। वे फूल उगाते हैं और उन्हें जापान में निर्यात करते हैं। जो कंपनियाँ स्वास्थ्य पेय बनाती हैं उन्हें वे शिनसुनचो नाम का औषधीय पौधा बेचते हैं। वे फल उगाते हैं और पूरा साल उन्हें सुखाते हैं। गाँव में बिजली आने से पहले उन्होंने एक तकनीक विकसित की जिसके द्वारा आलुओं को पहाड़ों में बनाई गई खास डिज़ाइन की गुफाओं में सुरक्षित रखा जा सकता था।

अब निर्यातक और खाद्य संसाधन कंपनियाँ किसानों के साथ सालाना कॉन्ट्रैक्ट कर सकती हैं, बीमा कंपनियाँ फ़सलों का बीमा करने का उत्सुक हैं और बैंक कृषि विकास के लिए कर्ज देने को हमेशा तैयार हैं क्योंकि इन छोटे किसानों ने अपने आपको संगठित किया है और एक साथ मिलकर ये कड़े कृषि-व्यवसायिक और गुणवत्ता नियंत्रण के नियमों का पालन करते हैं। वे अपने उत्पादन और कटाई के समय की पूरी योजना मौसमों के हिसाब से नहीं बल्कि बाज़ार के स्वाद और माँगों को पूरा करने के लिए बनाते हैं। जब जापान और कोरिया दोनों बर्फ़ से ढके होते हैं तो ये किसान उन्हें ताज़ा फूल उपलब्ध कराते हैं।

क्या खेती मौसमों पर निर्भर नहीं होती?

यॉन्ग ऐम में नहीं। वहाँ अधिकांश लोग प्रकृति या उसकी संचालक आत्माओं की उपासना नहीं करते। वे प्रकृति पर अपना खुद का अधिकार स्थापित कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने यह विश्वास करना आरंभ कर दिया है कि वे अपने सृष्टिकर्ता के स्वरूप में बनाए गए हैं ताकि वे प्रकृति पर अपना अधिकार स्थापित करें। इस नए विश्वास के अनुरूप, ज्यादातर खेती अब ग्रीनहाउस में होती है जहाँ बाहर का जमा देने वाला तापमान अंदर की फ़सल पर कोई असर नहीं डाल सकता। दरअसल, संवेदनशील फ़सलें मोटे प्लास्टिक की दो सतहों से बने ग्रीनहाउसों में उगाई जाती हैं। सरदी के महीनों में उपर की सतह बर्फ़ से ढकी रहती है लेकिन दो सतहों से बीच 10 डिग्री सेल्सियस तापमान का पानी बहता रहता है। इससे अंदर का तापमान इतना गरम रहता है कि खरीदने वाले की सहूलियत के हिसाब से कोई भी फ़सल कभी भी उगाई जा सकती है। पानी सरकार के बनाए किसी सार्वजनिक बाँध से नहीं आता। किसान ज़मीन के नीचे के पानी को पंप करके लाते हैं, यह भी उसी सोच के अनुरूप है कि वे प्रकृति को संचालित करने के लिए सृजे गए थे न कि उसकी पूजा करने के लिए। बल्कि, किसान सरकार को उस पानी के इस्तेमाल के लिए टैक्स देते हैं जो उनकी अपनी ज़मीन के नीचे है।

यॉन्ग ऐम को किस चीज़ ने बदला?

अड़तीस साल पहले, एक असाधारण किसान किम यॉन्ग-की ने यॉन्ग ऐम गाँव के साथ लगती 50 हेक्टेयर पहाड़ी बंजर ज़मीन खरीदी। चूँकि कोई भी



In 1966, Dr Kim Yong-Ki was honoured with Ramon Magsaysay Award for Public Service वर्ष 1966 में डॉ किम यॉन्ग-की को रमन मैगसेसे सार्वजनिक सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया

WHAT TRANSFORMED YONGAM?

Thirty-eight years ago, an unusual farmer, Kim Yong-Ki, bought 50 hectares of mountainous wasteland just outside of Yong Am village. Since no one wanted to buy this useless wilderness, he was able to get it at a price equivalent to one cigarette packet per *pyong* – the smallest unit of land that is sold in Korea. In fact, Kim Yong-Ki bought the land precisely because it was unproductive wilderness. He wanted it to be a model, so he called his farm Canaan. That is the original name for the land now called Israel. Kim chose that name because his vision to transform his nation was inspired by the Bible's narrative concerning Canaan – a prosperous land “flowing with milk and honey”.

About 3,500 years ago, the Israelites or Jews were called Hebrews. They were slaves in Egypt. When Egyptian slave masters became especially cruel, the Hebrews cried out to God who sent Moses to deliver them from their slavery. Moses was not meditating when he “met” God. He was grazing his sheep on a mountain and saw a bush burning. He became curious when the bush kept burning on and on and on. He went to figure out why it was not burnt out but was startled when a voice came from the bush asking him to take off his shoes because it was sacred ground. The voice claimed that he was the God of his forefathers Abraham, Isaac and Jacob; that He had seen the misery of His people; He had heard their cries; and had come to deliver them from their slavery. God said that He would take them out of their slavery into a land He had promised their fathers, a land of liberty and prosperity – the land of Canaan. God asked Moses to go to Pharaoh and give His message: Let My people go, so that they may serve Me (instead of you)!

Of course, Moses neither believed the voice, nor was he eager to undertake such a suicidal mission. The second book of the Bible, called Exodus, describes how sceptical Moses was about whether the voice was, in fact, God's (Chapter 3). To cut a long story short: Moses became instrumental in transforming slaves into owners and rulers of Canaan. That amazing transformation is recorded in the first five books of the Bible. It was that miraculous historical event that inspired Kim Yong-Ki to believe that God could also deliver his people from Japan's tyranny and transform their useless land into a Canaan.

Kim is actually his surname, like Chaturvedi. The story of his own transformation begins with his mother, Kim Kang Yun. Although she was a simple, poor peasant, thanks to her high-class Buddhist background, she was literate. Like everyone else, her family was experiencing the awful impact of Japan's tyrannical rule. One day while



Former President of India Dr Abdul Kalam with the representatives of Canaan Farmers School भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम कनान कृषि विद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ

इस बेकार बियाबान को खरीदना नहीं चाहता था, उन्हें यह जमीन प्रति प्यॉन एक सिगरेट पैकेट के बराबर की कीमत पर मिल गई। प्यॉन कोरिया में जमीन बेचने की सबसे छोटी इकाई है। दरअसल, किम यॉन्ग-की ने यह जमीन इसीलिए खरीदी थी क्योंकि यह ऊसर बियाबान थी। वह चाहते थे कि यह एक आदर्श नमूना बने, इसलिए उन्होंने अपने इस खेत को नाम दिया कनान। यह उस देश का मूल नाम था जिसे आज हम इस्राएल कहते हैं। किम ने यह नाम इसलिए चुना क्योंकि अपने राष्ट्र को बदलने का उनका दर्शन, कनान के बारे में बाइबल के वृत्तांत से प्रेरित था। कनान, वह समृद्ध भूमि जहाँ “दूध और शहद की नदियाँ बहती थीं”।

करीब 3,500 साल पहले, इस्राएली या यहूदियों को इब्रानी कहा जाता था। वे मिस्र में गुलाम थे। जब मिस्री हुक्मरान बहुत ज्यादा निर्दयी हो गए तो इब्रानियों ने ईश्वर की दुहाई दी जिन्होंने मूसा को उनकी गुलामी से छुड़ाने के लिए भेजा। जब उनकी ईश्वर से “मुलाकात” हुई तो मूसा ध्यान लगा कर नहीं बैठे थे। वे पहाड़ी पर अपनी भेड़ों को चरा रहे थे जब उन्होंने एक जलती हुई झाड़ी देखी। उनके मन में जिज्ञासा जागी कि यह झाड़ी तो जलती ही जा रही है। वह यह जानने के लिए उसके पास गए कि यह जल तो रही है पर जल कर राख क्यों नहीं हो रही। लेकिन वे चौक गए जब झाड़ी से एक आवाज आई और उन्हें अपने जूते उतारने के लिए कहा क्योंकि वह एक पवित्र स्थान था। उस आवाज ने कहा कि वह उनके पुरखों अब्राहम, इसाहक और याकूब के परमेश्वर हैं, और यह कि उन्होंने अपने लोगों के दयनीय दशा देखी है, उन्होंने उनकी दुहाई को सुन लिया है, और उनको उनकी गुलामी से छुड़ाने के लिए आ गए हैं। ईश्वर ने कहा कि वे उन्हें इस गुलामी से छुड़ा कर एक ऐसे स्थान पर ले जाएँ जिसकी प्रतिज्ञा उन्होंने उनके पूर्वजों से की थी – एक ऐसा स्थान जहाँ आजादी और समृद्धि होगी अर्थात् कनान की धरती। ईश्वर ने मूसा को फ़िरौन (मिस्र का बादशाह) के पास जाने के लिए और उसे यह संदेश देने के लिए कहा: मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे (तेरी बजाय) मेरी सेवा करें।

हालाँकि, मूसा ने न तो उस आवाज पर यकीन किया और न ही वह इस आत्मघाती मिशन पर जाने के लिए तैयार थे। बाइबल की दूसरी पुस्तक निर्गमन में हमें विवरण मिलता है कि मूसा इस बारे में संशय कर रहे थे कि क्या वह आवाज वास्तव में ईश्वर की थी (अध्याय 3)। संक्षेप में कहें तो मूसा गुलामों को कनान के मालिकों और शासकों में बदल देने के लिए सहायक बने। यह हैरतअंगेज बदलाव बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों में दर्ज है। यही वह चमत्कारी ऐतिहासिक घटना थी जिसने किम यॉन्ग-की को यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि ईश्वर उनके लोगों को जापानी जुल्म से छुटकारा दिला सकते हैं और उनकी बेकार जमीन को कनान में तब्दील कर सकते हैं।

किम दरअसल एक उपनाम है, जैसे कि चतुर्वेदी। उनका अपना बदलाव उनकी माँ किम कैंग यून से शुरू होता है। हालाँकि वह एक साधारण, गरीब किसान थी, लेकिन उच्चवर्गीय बौद्ध पृष्ठभूमि की होने के कारण वे साक्षर

she was working on her farm, a Western missionary passed by and dropped a pamphlet. It explained this verse from the Bible: "For God so loved the world that He gave His only begotten son, so that whosoever believes in Him should not perish but have everlasting life" (John 3:16). The spirits that Kang Yun worshipped demanded all sorts of sacrifices from her but never did anything to save her from her misery. So, she was intrigued to read about a God who sacrificed for her. She knew that she loved her baby enough to sacrifice herself for him. Therefore, it made sense to her that her Creator might love her enough to make a sacrifice to save her. She had been taught that one had to work hard over many life-times to save oneself. So, the information that God could save her in this life appealed to her. She decided to learn more about her Creator and in order to serve the Creator only decided to discard all lesser deities. Her husband who was well read in Chinese Buddhist literature agreed with her reasoning. They decided to send their son to Kwang Dong Secondary School run by Yeo Woon Young, a devout scholar who influenced many leaders of modern Korea.

Yeo Woon Young taught Kim to study the Bible. And the Bible taught Kim that God was not a "meditator", who dreamed up this world. God was a worker. He worked to create the world. Therefore, we cannot be godly if we do not *work* diligently. The Bible also taught Kim that God did not want his children to be poor, living in slums. He put Adam and Eve in a garden because He wanted to bless His children with abundant life. Kim accepted the Bible's teaching that poverty was a result of human sin which

थीं। हर किसी की तरह उनका परिवार भी निरंकुश जापानी शासन के भयावह प्रभाव का अनुभव कर रहा था। एक बार जब वह अपने खेत में काम कर रही थीं तो एक पश्चिमी मिशनरी वहाँ से गुज़रा और उनके यहाँ एक पर्चा छोड़ गया। उस पर्चे में बाइबल की एक आयत की व्याख्या की गई थी: "क्योंकि ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु हमेशा का जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)। जिन आत्माओं की कैंग यून उपासना करती थीं वे हर किस्म की बलियाँ माँगा करती थीं लेकिन उन्हें उनकी पीड़ाओं से बचाने के लिए कुछ नहीं करती थीं। इसलिए वे ऐसे ईश्वर के बारे में और अधिक पढ़ने को उत्सुक हुईं जिन्होंने अपने पुत्र को उनके लिए बलिदान कर दिया। वे अपने बच्चे से प्रेम करती थीं और उसे बचाने के लिए बलिदान देने को तैयार थीं। इसलिए उन्हें ये बात आसानी से समझ में आ गई कि उनके सृजनहार भी उनसे इतना प्रेम कर सकते हैं कि उन्हें बचाने के लिए बलिदान दें। कैंग यून को यह सीख दी गई थी कि उन्हें अपने आप को बचाने के लिए कई जन्मों तक कड़ी मेहनत करनी होगी। इसीलिए यह जानकारी कि ईश्वर उन्हें इसी जन्म में बचा सकते हैं उन्हें आकर्षक लगी। उन्होंने अपने सृजनहार के बारे में और अधिक सीखने का फ़ैसला किया और केवल सृजनहार की सेवा करने के उद्देश्य से छोटे देवगणों का परित्याग कर दिया। उनके पति, जोकि चीनी बौद्ध साहित्य के अच्छे जानकार थे, उनके तर्क से सहमत हुए। उन्होंने अपने बेटे को क्वाना डॉन माध्यमिक विद्यालय में भेजने का फ़ैसला लिया। यह स्कूल यिओ वॉन योना चलाते थे जो एक समर्पित विद्वान थे तथा जिन्होंने आधुनिक कोरिया के कई अगुवों को प्रभावित किया।

THE MIRACULOUS HISTORICAL EVENT RECORDED IN THE BIBLE INSPIRED KIM YONG-KI TO BELIEVE THAT GOD COULD ALSO DELIVER HIS PEOPLE

बाइबल की चमत्कारी ऐतिहासिक घटना ने किम यॉन्ग-की को विश्वास दिलाया कि ईश्वर उनके लोगों को छुटकारा दिलाएँगे

brought a curse upon humans and the earth. Our sinfulness has made life difficult, but God is ready to forgive our sins. He sent Jesus to save us from our sin and its consequences such as slavery, tyranny and poverty.

Once Kim realized that God wanted him to love his neighbours as himself, therefore, *service* became as important for him as work.

Sacrifice was the third important lesson that Kim learnt from Jesus. His life's mission was shaped by Jesus' teaching, "Seek first His [God's] kingdom and His righteousness and all these things [like food, clothing and shelter] will be given to you as well" (Matthew 6:33).

Such teachings made Kim a man who prayed as hard as he worked. He believed God and began to buy wastelands, using diligent work and creativity to turn them into model farms. Christ's spirit of service and sacrifice began to manifest itself in his efforts to help his neighbours benefit from his own experiments, creative innovations and work-habits. He soon realized that Korea could not be transformed by innovations and projects alone. It was even more important to change his people's traditional mindset and cultural values. Therefore, he became as passionate about teaching true godliness as about good agriculture.

His first community, Bongdan Ideal Village (1931-1945) was established during Japanese occupation. His faith in God gave him such fearlessness that he made it a centre for cultivating nationalism along with

यिओ वून यॉन्ग ने किम को बाइबल का अध्ययन करना सिखाया। और बाइबल ने किम को सिखाया कि ईश्वर कोई साधक नहीं हैं जो ध्यान लगाए बैठे हैं और जिन्होंने इस दुनिया को एक स्वपनलीला के रूप में रचा है। ईश्वर एक श्रमिक हैं। उन्होंने दुनिया को बनाने के लिए श्रम किया। इसलिए, अगर हम मेहनत से काम नहीं करते तो हम भक्तजन नहीं बन सकते। बाइबल ने किम को यह भी सिखाया कि ईश्वर नहीं चाहते कि उनके बच्चे गरीब हों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहें। उन्होंने आदम और हव्वा को बाग में रखा क्योंकि वह अपने बच्चों को बहुतायत के जीवन से आशीषित करना चाहते थे। किम ने बाइबल की इस सीख को स्वीकार किया कि गरीबी मानवीय पाप का नतीजा है जो मनुष्यों और धरती पर एक शाप ले आया। हमारे पापमय होने के कारण हमारे जीवन मुश्किलों भरे हो गए, लेकिन ईश्वर हमारे पापों को क्षमा करने को तैयार हैं। उन्होंने हमें हमारे पाप और उसके परिणामों जैसे कि गुलामी, जुल्म और गरीबी से छुड़ाने के लिए यीशु को भेजा।

जब किम ने यह समझ लिया कि ईश्वर चाहते हैं कि वे उन्हें अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना है तो सेवा भी उनके लिए काम जितनी ही महत्वपूर्ण हो गई।

यीशु से जो तीसरा महत्वपूर्ण सबक किम ने सीखा वह था *बलिदान*। उनके जीवन के मिशन को यीशु की शिक्षा ने आकार दिया था, "...तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं [जैसे कि रोटी, कपड़ा और मकान] तुम्हें दे दी जाएंगी" (मती 6:33)। ऐसी शिक्षाओं ने किम को ऐसा आदमी बनाया जो जितनी मेहनत से काम



The Canaan project being launched in Chinveriya, Bihar
चिनवेरिया, बिहार में कनान परियोजना की शुरुआत

sweet potatoes. He began inspiring his people to seek political and economic freedom. That is why he is sometimes called the Korean Gandhi.

On 9 March 1962, the then President of South Korea, Park Chung-hee, visited Dr Kim's fourth home and farm in Hwangsan Canaan Farm. What he saw so inspired him that he said, "This home and this farm have carried out a revolution in advance of our nation. If all our people were like this, the backwardness of our country would rapidly disappear." The Government of Korea began sending officials to study in Canaan Farmers School in order to nationalize his effort through the New Village Movement (*Saemaueul Undong*). That grassroots movement began transforming Korea into a modern economic powerhouse that is now blessing many poor countries.

Canaan Farm is now led by his equally visionary and hardworking son, Dr Kim Bum-il. Under his leadership the movement began impacting the world. In 1991 he established the first Canaan farm outside Korea, in Bangladesh. In 2006, he visited India and was recognized by the then president, Dr Abdul Kalam, as a model that India needed. In India, Bihar is the first state where Canaan has begun training grassroots leaders. The number of leaders Canaan Farmer's School has trained in Korea and around the world exceeds 7,00,000. Since 2007, their most effective training happens in Canaan Global Leadership Center, which runs a 3-month-long school in partnership with Yonsei University in Seoul, South Korea. Proven world leaders such as Randall Hoag teach community leaders of developing nations (i) Pioneering Mindset (ii) Project Management, (iii) Leadership Skills, (iv) Organic Agriculture, (v) Community Development, (vi) Economic Development, (vii) Environmental Management, (viii) Global Governance and Civil Society, (ix) Public Health and (x) Computer Skills.



Dr Vishal Mangalwadi serves as a guest lecturer at Handong Global University in South Korea, which partners with Canaan Farmers School. This university offers special scholarship to international students. Look for more information in coming issues of FORWARD Press.

करता था उतनी ही लगन से प्रार्थना किया करता था। उन्होंने ईश्वर पर भरोसा किया और बंजर जमीनें खरीदने लगे, और लगानपूर्ण काम और सृजनात्मकता का उपयोग करते हुए उन्हें आदर्श खेत बनाने लगे। और जब उन्होंने अपने पड़ोसियों की मदद करनी शुरू की कि वे भी उनके प्रयोगों, सृजनात्मक नवपरिवर्तनों और काम की आदतों से लाभ पा सकें तो मसीह की सेवा का भाव और बलिदान उन प्रयासों में दिखने लगे। उन्होंने शीघ्र ही जान लिया कि कोरिया केवल नवपरिवर्तनों और परियोजनाओं के बल पर ही नहीं बदलेगा। लोगों की पारंपरिक मानसिकता और सांस्कृतिक मूल्यों को बदलना अधिक महत्वपूर्ण काम था। इसलिए, वे सच्ची भक्ति सिखाने के बारे में भी उतने ही उत्साही थे जितने कि अच्छी खेती करना सिखाने में।

उनका पहला समुदाय, बॉनाडेन आदर्श गाँव (1931-1945), जापानी कब्जे के दौरान स्थापित किया गया था। ईश्वर में उनके विश्वास ने उन्हें ऐसी निर्भीकता दी कि उन्होंने उसे शकरकंद के अलावा राष्ट्रवाद की फसल उगाने का केंद्र बना डाला। उन्होंने लोगों को राजनीतिक और आर्थिक आजादी की खोज करने के लिए प्रेरणा दी। इसीलिए उन्हें कभी-कभी कोरिया का गाँधी भी कहा जाता है।

नौ मार्च 1962 को दक्षिण कोरिया के तत्कालीन राष्ट्रपति, पार्क चुंग-ही ने डॉ किम के चौथे घर और खेत ह्वानसांग कनान खेत का दौरा किया। जो उन्होंने देखा उससे वे प्रेरित हुए कि उन्होंने कहा, "इस घर और गाँव ने हमारे राष्ट्र के विकास के लिए एक क्रांति ला दी है। अगर हमारे सब लोग ऐसे ही हों तो हमारे देश का पिछड़ापन जल्दी ही गायब हो जाएगा।" कोरिया की सरकार ने अपने अधिकारियों को कनान कृषि विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजना शुरू कर दिया ताकि उनके इस प्रयास का नवीन ग्रामीण आंदोलन (साईमायउल उदोग) के द्वारा राष्ट्रीकरण किया जाए। आधारभूत स्तर का यह आंदोलन कोरिया को एक आधुनिक आर्थिक शक्ति के रूप में परिवर्तित करने लगा और अब वह कितने ही गरीब देशों के लिए आशीष का कारण है।

कनान खेत का नेतृत्व अब उनके उतने ही दर्शनयुक्त और परिश्रमी पुत्र डॉ किम बम-इल कर रहे हैं। उनकी अगुवाई में यह आंदोलन दुनिया भर में असर दिखाने लगा। साल 1991 में बांग्लादेश में कोरिया से बाहर पहला कनान खेत शुरू किया गया। साल 2006 में वह भारत आए और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम ने कहा कि यह एक ऐसा मॉडल है जिसकी जरूरत भारत को है। भारत में, बिहार पहला राज्य है जहाँ कनान ने आधारभूत स्तर के अगुवों को प्रशिक्षण देना आरंभ किया है। जिन अगुवों को कनान कृषि विद्यालय ने कोरिया और दुनियाभर में प्रशिक्षित किया है उनकी संख्या सात लाख से अधिक है। साल 2007 से उनका सबसे प्रभावशाली प्रशिक्षण केनन ग्लोबल लीडरशिप सेन्टर में होता है जो सियोल की योनसेई यूनीवर्सिटी के सहयोग से तीन महीने का एक स्कूल चलाते हैं। विश्व के प्रमाणित अगुवे जैसे कि रैंडल होग विकासशील देशों के सामुदायिक अगुवों को इन विषयों पर शिक्षा देते हैं: 1) अग्रदूत मानसिकता, 2) परियोजना प्रबंधन, 3) अगुवाई कुशलताएँ, 4) जैविक खेती, 5) सामुदायिक विकास, 6) आर्थिक विकास, 7) पर्यावरण प्रबंधन, 8) वैश्विक संचालन तथा नागरिक समाज, 9) जन स्वास्थ्य तथा 10) कंप्यूटर कुशलताएँ।

डॉ विशाल मंगलवादी दक्षिण कोरिया की हैंगडॉन्ग ग्लोबल यूनीवर्सिटी में अतिथि लेक्चरर हैं जो कनान कृषि विद्यालय की सहयोगी है। यह यूनिवर्सिटी अंतरराष्ट्रीय छात्रों को विशेष छात्रवृत्ति प्रदान करती है। अधिक जानकारी के लिए फॉरवर्ड प्रेस के आगामी अंकों की प्रतीक्षा करें।